300th Birth Anniversary of Ahilya Bai Holkar

Born in 1725 in Chondi, Maharashtra, Ahilya Bai Holkar is one of the most revered figures in Indian history, known for her leadership and contributions to the cultural and economic development of her kingdom. As queen of Malwa from 1767 to 1795, her reign marked a golden era of prosperity, justice, and artistic growth.

Ahilya Bai was born into a humble family of the Deshmukh clan. Her father, Mankoji Shinde, served as a village headman, enabling her to receive a good education and develop an early interest in governance. At the age of 19, she married Khanderao Holkar, son of Malhar Rao Holkar, founder of the Holkar dynasty.

Widowed in 1754 with a young daughter after her husband's death in battle, Ahilya Bai showed remarkable strength. Her composure impressed her father-in-law, Malhar Rao Holkar, who recognised her leadership potential and began mentoring her in administration and public affairs.

Following Malhar Rao's death in 1766, Ahilya Bai became the de facto ruler of Malwa. Formally ascending the throne in 1767, she faced political instability and threats from rival states and the British East India Company. Though her rise was unprecedented for a woman in a male-dominated society, she quickly proved her capabilities.

Ahilya Bai ensured fair governance and prioritised the welfare of her subjects. Her just rule earned her widespread admiration and solidified her place as a beloved monarch. She handled affairs of state with wisdom, maintained peace, and promoted inclusive justice.

Under her leadership, Malwa prospered both economically and culturally. She invested in infrastructure, commissioning roads, forts, and temples that boosted trade and connectivity. Her architectural contributions include the Maheshwar Fort and temples built along the banks of the Narmada River, many of which still stand today.

Ahilya Bai was a great patron of the arts. She encouraged music, dance, and literature, fostering cultural growth. Her court became a hub for scholars and artists, sparking a cultural renaissance. Known for her love of poetry, she often took part in literary gatherings and supported creative expression.

Her commitment to social welfare was evident in the institutions she established, including hospitals and schools that promoted healthcare and education. She believed in the transformative power of education, especially for women, and her efforts laid a foundation for future progress in this area.

A deeply spiritual leader who followed Hindu principles, Ahilya Bai also practised religious tolerance. She welcomed scholars and religious leaders from various faiths to her court, promoting dialogue and unity among her diverse subjects. Her policies strengthened social harmony and reflected her inclusive vision.

Among her most notable contributions was the construction of temples and ghats along the Narmada River. She believed that spiritual access should be open to all, regardless of caste or creed. Her initiatives to provide clean drinking water and support agriculture further demonstrated her care for everyday needs.

Despite challenges, including the growing influence of the British East India Company, Ahilya Bai navigated political tensions with diplomacy and strategic alliances. Her ability to protect her kingdom while preserving its independence was a testament to her political acumen.

Ahilya Bai Holkar passed away on 13 August 1795. Her death marked the end of a remarkable chapter in Indian history, but her legacy lived on. She is remembered as a visionary ruler who embodied courage, wisdom, and compassion. Her reign not only transformed Malwa but also challenged the limitations placed on women in leadership.

In modern India, Ahilya Bai is celebrated as a symbol of empowerment. Her story continues to inspire generations of women striving for recognition and equality.

Ahilya Bai Holkar's reign stands as a powerful example of visionary leadership, cultural renaissance, and social commitment. She broke barriers and redefined the role of women in Indian public life. Her contributions remain deeply etched in the nation's memory, and her name continues to evoke respect and admiration.

The Department of Posts is proud to release a Commemorative Postage Stamp on the 300th Birth Anniversary of Ahilya Bai Holkar.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Sh Anuj Kumar
Text	:	Referenced from content provided by Ministry of Culture

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा

India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग

DEPARTMENT OF POSTS

अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती

300TH BIRTH ANNIVERSARY OF AHILYA BAI HOLKAR



विवरणिका **BROCHURE**

अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती

वर्ष 1725 में महाराष्ट्र के चौंडी में जन्मी 'अहिल्याबाई होलकर' भारतीय इतिहास की सबसे प्रतिष्ठित हस्तियों में से एक हैं। विलक्षण नेतृत्व क्षमता की धनी अहिल्याबाई को उनके राज्य के सांस्कृतिक व आर्थिक विकास में उनके योगदान के लिए जाना जाता है। मालवा की महारानी के रूप में सन् 1767 से 1795 तक रहा उनका शासनकाल समृद्धि, न्याय और कला के विकास का स्वर्ण युग माना जाता है।

अहिल्याबाई का जन्म देशमुख समाज के एक साधारण परिवार में हुआ था। उनके पिता, मनकोजी शिंदे, गांव के मुखिया थे। अहिल्याबाई ने अपने पिता की छत्रछाया में उत्तम शिक्षा प्राप्त की और उन्हीं के सानिध्य में शासन–प्रशासन के कार्य में प्रारंभिक रुचि विकसित की। 19 वर्ष की आयु में उनका विवाह होलकर राजवंश के संस्थापक मल्हार राव होलकर के पुत्र खंडेराव होलकर से हुआ।

वर्ष 1754 में एक युद्ध के दौरान पति की मृत्यु के पश्चात अहिल्याबाई ने असाधारण शक्ति और संयम का परिचय देते हुए अपनी एकमात्र बेटी और खुद को बखूबी संभाला। अहिल्याबाई के ससुर मल्हार राव होलकर उनके इस असीम धैर्य से अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने अहिल्याबाई की नेतृत्व क्षमता को पहचानते हुए, प्रशासन तथा जन साधारण से जुड़े मामलों में उनका मार्गदर्शन करना आरंभ कर दिया।

वर्ष 1766 में मल्हार राव के देहावसान के बाद, मालवा के शासन–प्रशासन का समस्त भार अहिल्याबाई के कंधों पर आ गया। 1767 में औपचारिक रूप से राज्याभिषेक के पश्चात, उन्हें राजनीतिक अस्थिरता और प्रतिद्वंद्वी राज्यों तथा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी से खतरों का सामना करना पड़ा। यद्यपि, तत्कालीन पुरुष–प्रधान समाज में महिला होते हुए उनका सत्ता संभालना एक अभूतपूर्व घटना थी। तथापि, उन्होंने शीघ्र ही अपनी क्षमता का लोहा मनवा दिया।

अहिल्याबाई ने निष्पक्ष शासन व्यवस्था सुनिश्चित की और अपनी प्रजा के कल्याण को प्राथमिकता दी। उनके न्यायपूर्ण शासन को व्यापक रूप से सराहा गया और इससे उन्होंने लोकप्रिय शासक के रूप में अपनी स्थिति सुदृढ़ की। अहिल्याबाई ने शासन संबंधी मामलों का बड़ी समझ–बूझ से समाधान किया, राज्य में व्यापक शांति स्थापित की और समावेशी न्याय को बढ़ावा दिया।

उनके शासनकाल में मालवा ने न केवल आर्थिक प्रगति हासिल की बल्कि वह सांस्कृतिक रूप से भी समृद्ध हुआ। उन्होंने मूलभूत सुविधाओं में निवेश किया और सड़कों, किलों तथा मंदिरों का निर्माण करवाया। इससे राज्य में आवाजाही आसान हुई व व्यापार को बढ़ावा मिला। उन्होंने वास्तुकला को भी खूब बढ़ावा दिया। अहिल्याबाई ने प्रसिद्ध महेश्वर किले और नर्मदा नदी के किनारे तमाम मंदिरों का निर्माण करवाया। जिनमें से कई मंदिर आज भी शान से खड़े हैं।

अहिल्याबाई कला की विलक्षण पारखी और संरक्षक थीं। उन्होंने अपने शासनकाल के दौरान संगीत, नृत्य और साहित्य को खूब प्रोत्साहन दिया, जिससे राज्य के सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा मिला। अनेक विद्वान और कलावंत सदैव उनके दरबार में विद्यमान रहते थे। इस प्रकार, उनका शासनकाल सांस्कृतिक पुनर्जागरण का भी साक्षी बना। कविता के प्रति अपने प्रेम के लिए ख्यात, अहिल्याबाई प्रायः साहित्यिक समारोहों में शामिल होती थीं और रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करती थीं।

सामाजिक कल्याण के प्रति अहिल्याबाई की प्रतिबद्धता स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उनके द्वारा बनवाए गए विभिन्न अस्पतालों और विद्यालयों सहित उनके द्वारा स्थापित किए गए तमाम संस्थानों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। अहिल्याबाई का अड़िग विश्वास था कि शिक्षा, विशेषतः महिला–शिक्षा युगांतरकारी शक्ति साबित हो सकती है। उनकी इसी सोच ने महिला शिक्षा के क्षेत्र में भविष्य की प्रगति की नींव रखी।

हिन्दू धर्म की अनन्य साधक और गहन आध्यात्मिक चेतना से परिपूर्ण अहिल्याबाई धार्मिक सहिष्णुता की प्रबल पक्षधर थीं। उन्होंने अपने दरबार में विभिन्न धर्मों के विद्वानों और धार्मिक गुरुओं का मुक्त हृदय से स्वागत किया। इससे, अलग–अलग वर्गों से संबंध रखने वाली उनकी प्रजा के बीच परस्पर संवाद और एकता की भावना को बढ़ावा मिला। उनकी नीतियों ने सामाजिक सद्भाव को सुदृढ़ करने का काम किया, इन नीतियों में उनका समावेशी दृष्टिकोण भी झलकता है।

नर्मदा नदी के किनारे भव्य मंदिरों और घाटों का निर्माण करना उनके सबसे उल्लेखनीय योगदानों में शामिल है। उनका मानना था कि आध्यात्मिता तथा आध्यात्मिक स्थलों तक पहुँच जाति या पंथ का भेदभाव किए बिना सब के लिए सुलभ होनी चाहिए। स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने और कृषि क्षेत्र को सहयोग प्रदान करने संबंधी उनकी तमाम पहलों में प्रजा की रोजमर्रा की आवश्यकताओं के प्रति उनकी चिंता और संवेदनशीलता प्रतिबिम्बित होती है।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बढ़ते प्रभाव सहित विभिन्न चुनौतियों के बावजूद, अहिल्याबाई ने अपनी कुशल कूटनीति और रणनीतिक साझेदारियों के बल पर तमाम राजनीतिक दबावों से बखूबी निपटने का काम किया। उन्होंने विलक्षण राजनीतिक सूझबूझ का परिचय देते हुए अपने राज्य की स्वतंत्रता को अक्षुण बनाए रखा और उसकी हर प्रकार से रक्षा की।

अहिल्याबाई होलकर का निधन 13 अगस्त 1795 को हुआ। उनके निधन के साथ ही भारतीय इतिहास का एक उल्लेखनीय अध्याय समाप्त हो गया। तथापि, उनकी विरासत आज भी जीवित है। अहिल्याबाई को एक ऐसे दूरदर्शी शासक के रूप में स्मरण किया जाता है, जो साहस, बुद्धिमता और करुणा की प्रतिमूर्ति थीं। उनका शासनकाल न केवल मालवा के लिए युगांतरकारी सिद्ध हुआ, बल्कि महिलाओं पर समाज द्वारा थोपे गए तमाम निर्बंधनों को भी उनके नेतृत्व से चुनौती मिली।

आधुनिक भारत में, अहिल्याबाई को सशक्तिकरण का प्रतीक माना जाता है। उनकी कहानी, समाज में अपनी पहचान और समानता के लिए जूझ रही महिलाओं की तमाम पीढ़ियों को प्रेरित करती आ रही है।

अहिल्याबाई होलकर का शासनकाल दूरदर्शी नेतृत्व, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और सामाजिक प्रतिबद्धता का एक सशक्त उदाहरण है। अहिल्याबाई ने अनेक बाधाओं को पार करते हुए भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका को पुनर्परिभाषित करने का कार्य किया। विभिन्न क्षेत्रों में उनके तमाम योगदान कृतज्ञ राष्ट्र की स्मृति में गहराई से अंकित हैं, और समूचा देश अहिल्याबाई के नाम को सम्मान और आस्था के साथ स्मरण करता है।

डाक विभाग अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए गौरव का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण कैशे : श्री अनुज कुमार

पाठ : संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त जानकारी पर आधारित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500p
मुद्रितडाक–टिकटें	: 202800
Stamps Printed	: 202800
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00